शेरखाँ से संघर्ष

हुमायूं के गुजरात के शासक बहादुरशाह से युद्ध में व्यस्त होने के समय शेरखाँ ने अपनी सैनिक शक्ति में बहुत वृद्धि कर ली थी। आगरा में हुमायूँ के सलाहकारों ने उसे शेरखाँ के दमन की सलाह दी। बाबर के मद में चूर हुमायूँ ने ऐसा नहीं किया। उसने शेरखाँ की गतिविधियों के संबंध में जानकारी हेतु हिन्दू बेग नामक कर्मचारी को भेजा, जिसे शेरखाँ ने रिश्वत द्वारा अपनी ओर मिला लिया। अतः हिन्दू बेग ने हुमायूँ को शेरखाँ की वफादारी का विश्वास दिलाया। जिसके कारण शेरखाँ और शक्तिशाली हो गया।